आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2368 • उदयपुर, शनिवार 19 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्

सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

कार्बन नैनोट्यूब से बनाई बिजली, छोटे रोबोट को चलाने के लिए कर सकते है उपयोग

अमरीका के मैसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआइटी) के इंजीनियरों ने छोटे कार्बन कणों (कार्बन नैनोट्यूब) का उपयोग करके बिजली पैदा करने का एक नया तरीका खोजा है। ये नैनो कार्बन कण आसपास के तरल के साथ मिलकर करंट बना सकते हैं तरल (कार्बनिक विलायक) के कणों से इलेक्ट्रॉन खींचने से करंट उत्पन्न होता है।

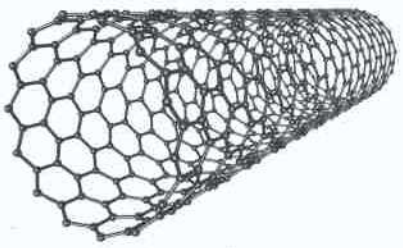

ऐसे किया प्रयोग– शोधकर्ताओं ने कार्बन नैनोट्यूब को पीसकर और उन्हें कागज जैसी सामग्री की एक शीट में लेकर बिजली पैदा करने वाले कण बनाए। हर शीट के एक तरफ टेफलॉन लेपित किया गया। फिर शोधकर्ताओं ने छोटे कणों को काट दिया। कण 250 माइक्रोन गुणा 250 माइक्रोन के थे। जब इन कणों को एसिटोनिट्राइल जैसे कार्बनिक विलायक में डुबोया जाता है, तो विलायक उनमें से इलेक्ट्रानों को खींचना शुरू कर देता है। विलायक इलेक्ट्रानों को दूर लें जाता है और सिस्टम इलेक्ट्रानों को स्थानांतरित करके संतुलित करने की कोशिश करता है।

यह एक विद्युत क्षेत्र उत्पन्न कर देता है। इस तकनीक का उपयोग सूक्ष्म या नैनोस्केल रोबोटो को चलाने के लिए किया जा सकता है।

इलेक्ट्रोकैमिस्ट्री

एमआइटी में कैमिकल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर माइकल स्ट्रानो के मुताबिक इस प्रक्रिया से बिना तारों के इलेक्ट्रोकैमिस्ट्री बनती है।

एक कण से 0.7 वोल्ट बिजली

शोध के मुताबिक प्रति कण लगभग 0.7 वोल्ट बिजली उत्पन्न कर सकता है। इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने यह भी दिखाया है कि वे एक छोटी सी टेस्ट ट्यूब में सैकड़ों कणों का पैक बेड बना सकते हैं। यह पैक बेड रिएक्टर अल्कोहल ऑक्सीडेशन नामक एक रासायनिक प्रतिक्रिया को शक्ति देने के लिए पर्याप्त ऊर्जा उत्पन्न करता है।

सेवा–जगत्

सेवा पथ पर आपका अपना, नारायण सेवा संस्थान

घर–घर भोजन, गांव–गांव राशन सेवा निरन्तर

सर्वे भवन्तु सुखिनः भाव के साथ मानवता की सेवा में जुटी नारायण सेवा ने सोमवार को कोरोना संक्रमितों के घर–घर 950 पैक्ट भोजन और खेजड़ा में 42 और बड़गांव की कच्ची बस्ती में 45 राशन किट मजदूर और गरीब परिवारों को निःशुल्क भेंट किए।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थापक चैयरमेन पद्मश्री कैलाश मानव की प्रेरणा से संस्थान ने कोरोना प्रभावितों के सेवार्थ भोजन, राशन,ऑक्सीजन,एम्बुलेंस और कोरोना दवाई किट आदि की फ्री सेवा पिछले 45 दिनों से निरंतर कर रहा है।

निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम गांव–गांव राशन वितरण के शिविर आयोजित कर मदद पंहुचा रही है। अब तक 30 हजार से ज्यादा राशन किट और 40 हजार से अधिक भोजन पैक्ट बांटे गए हैं। संस्थान के 40 साधक इस सेवा कार्य में लगे हैं।

एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते है! कोरोना में उनका काम बंद है। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई।

संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए ओर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुंचायी।

संस्थान जरूरतमंदो के घर–घर भोजन, दवाई और ऑक्सीजन सिलेंडर की निःशुल्क सेवाएं दे रहा है। जिससे हजारों लोग रोज लाभान्वित हो रहे हैं।

अपनी जुबानी

संस्थान की कोरोना सेवाओं से लाभान्वितों के अनुभव

मैं और मेरे परिवार के अन्य सदस्य माता–पिता, पत्नी और दोनों बहने कोरोना पॉजिटिव हो गए। हमनें डॉक्टर्स की सलाह पर होम आइसोलेट रहने का फैसला लिया। लेकिन हम सभी संक्रमितों के सामने दोनों समय के भोजन की समस्या थी। हमारा खाना कौन बनाएं? तभी हमें नारायण सेवा के घर–घर भोजन सेवा की जानकारी मिली।

संस्थान की हेल्पलाइन नम्बर पर कॉल किया। हमें 6 पैकेट भोजन भेजना शुरूकर दिया। वास्तव में खाना– बहुत स्वादिष्ट था। अच्छे से पैकिंग में सुरक्षित पैकेट 15 दिन तक निरन्तर मिलता रहा स्वादिश्ट भोजन। अब हमारा पूरा परिवार पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस सेवा के लिए संस्थान का बहुत आभार।

– अंकित माथुर, उदयपुर

मैं और मेरी पत्नी व बेटे को बुखार आने लगा। कोरोना टेस्ट करवाया। हमारी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आ गई। तभी हम सब घर में आइसोलेंट हो गए। हम तीनों बीमार दवाई और भोजन के लिए चिंन्तित थे। तभी मेरे मित्र ने मुझे नारायण सेवा संस्थान की कोरोना किट और घर–घर भोजन सेवा से अवगत कराया। मैंनें दूरभाष से सम्पर्क किया। हमें कोरोना दवाई किट और भोजन पैकेट सुविधा शुरू हो गई। 14 दिनों तक संस्थान से कार्यकर्त्ताओं की सेवाएं मिली। सुपाचय और रूचिकर भोजन के साथ कोरोना मेडीसन खाकर कोरोना संक्रमण से उबर गए। हम सभी अब पूर्ण स्वस्थ्य है। संस्थान की दिल से धन्यवाद।

– रानू राजपूत, उदयपुर

हार्ट पेशेन्ट मेरे दादा जी एक शादी में गए, वहां उन्हें सर्दी जुकाम की शिकायत हो गई। कोरोना रिपोर्ट करवाई जो कि पॉजिटिव आई। डॉक्टर्स ने होम आइसोलेट रहकर ट्रीटमेंट लेने की बोला। घर पर केयर करने के लिए हमने नारायण सेवा संस्थान से मदद मांगी, तो हमें हेड्रोलिक बेड और ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करवाया। 10 दिनों में दादाजी रिकेवर हो गए। इस सहयोग के लिए संस्थान का आभार।

– प्रेम आहरी, बड़गांव

मेरे पिता जी 5 दिन पहले कोरोना संक्रमित निकले। उन्हेंघर पर रखकर ईलाज शुरू किया लेकिन उनका ऑक्सीजन लेवल गिरने लगा। हमारी फिक्र बढ़ने लगी। हॉस्पीटल में ऑक्सीजन बेड के लिए प्रयास किया पर मिला नहीं। मदद के लिए नारायण सेवा संस्थान से सम्पर्क किया। तो उन्होंने ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करा दिया। 2–3 दिन ऑक्सीजन पर रहने के बाद उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। अब पिता जी पूर्ण कुशल है। विपदा की घड़ी में संस्थान की मदद के लिए हम सदैव कर्तज्ञ रहेंगे।

– मोहन मीणा, डबोक

सकारात्मक सोच

एक परीक्षा के दौरान अध्यापक ने हल करने हेतु प्रश्न–पत्र विद्यार्थियों को वितरित किए। प्रश्न पत्र के अग्र भाग पर लिखा था, पीछे के पृष्ठ पर अंकित प्रश्न को अवश्य करें। विद्यार्थियों ने पृष्ठ पलटा, पूरे पृष्ठ पर एक छोटा–सा काला बिन्दु अंकित था और प्रश्न लिखा था, "जो कुछ आपको दिखाई देता है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।" सभी विद्यार्थियों ने उस छोटे से काले बिन्दु के बारे में वर्णन किया। किसी ने उसके परिमाप, किसी ने उसकी स्थिति और किसी ने उसके आकार पर नाना–नाना प्रकार की टिप्पणियाँ कीं और उत्तर पुस्तिका अध्यापक को लौटा दी। अध्यापक ने सभी उत्तर पुस्तिकाओं को देखा और कक्षा में विद्यार्थियों से कहा, "तुम सभी ने पीछे के पृष्ठ पर अंकित उस काले बिन्दु का अपने–अपने तरीके से वर्णन किया, परन्तु किसी ने भी उस बिन्दु के अलावा चारों ओर के सफेद हिस्से का वर्णन नहीं किया।" हमें भी जीवन में श्वेत रंग रूपी सकारात्मक पक्ष के बारे में सोचना चाहिए। कालेपन अर्थात् नकारात्मक पक्ष के बारे में नहीं सोचना चाहिए। सकारात्मकता ऊर्जावान बनाती है, जबकि नकारात्मकता हमें ऊर्जावान बनाती है। सकारात्मकता से ही कार्य सिद्ध होते हैं। अतः सदैव सकारात्मक सोचें।

गंगा शहर निवासी गुवाहाटी प्रवासी लोढा परिवार ने पेश की मिशाल

पुत्र की शादी में खर्च नहीं कर, दिव्यांगों के ऑपरेशन का लिया संकल्प

नारायण सेवा संस्थान बनी प्रेरणा का स्रोत

बीकानेर। गंगाशहर निवासी व गुवाहाटी प्रवासी समाजसेवी मानमल लोढा ने अपने पुत्र नितेश लोढा की शादी को वृहद स्तर पर न करके एक नारायण सेवा संस्थान के माध्यम से दिव्यांग का ऑपरेशन करवाने का निर्णय लिया है। नारायण सेवा संस्थान बीकानेर के प्रेरक कमल लोढा ने बताया कि गुवाहाटी के व्यवसायी मानमल लोढा ने बताया कि उत्सव के अवसर अनेक मिल जाएंगे लेकिन इस विकट दौर में सेवा धर्म निभाना जरूरी है।

गौरतलब है कि नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर 4 लाख से ज्यादा दिव्यांग ऑपरेशन कर चुकी है। कोरोना काल में 50,000 परिवारों को अनाज का निःशुल्क वितरण किया।

सम्पादकीय

उत्साह और उमंग हृदय के भावों का दिखता हुआ बिम्ब होते हैं। मनुष्य के हृदय में जो भाव पैदा होते हैं वे प्रकट होने के लिये उसकी क्रियाओं का, हावभाव का, अभिव्यक्ति का सहारा लेते हैं। पर हम आज सभ्यता के झूठे चक्कर में दिल के भावों का प्रकट होने का अवसर देने में कोताही करते हैं।

आज हमारे जीवन की विडम्बना यह है कि हम रोने के प्रसंगों पर रो नहीं पाते और हँसने के मौकों पर हँस नहीं पाते। हम हँसने या रोने से पहले यह विचार करने लग जाते हैं कि हमारे हँसने और रोने पर लोग क्या सोचेंगे ? लोगों की सोच के चक्कर में हम अपने भावों को दबाने में ही रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि अभिव्यक्ति के दमन से असहनता और त्रिमता बढ़ती जाती है। इसे मिटाने के लिये हमें अपने मनोभावों को दबाने के बजाय उचित तरीके से प्रकट करने का आभास बनायेंगे तो हम सहज जी सकेंगे।

कुछ काव्यमय

मन के भावों की अभिव्यक्ति,
करते रहो सदा निर्बाध।
वरना खोने लग जायेगा,
जीवन का वह मीठा स्वाद।
हँसना, रोना, गाना, नर्तन,
इन्हें बना लें जीवन अंग।
तभी सहजता नैसर्गिकता
चल पायेगी जीवन संग।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

दया भावना

देता है, लेता नहीं,
सच्चा स्नेही जान।
प्रेम नहीं सौदा करे,
यही धर्म का ज्ञान।।

आप धर्म के ज्ञान वाले हो, कभी दया रखते हो। विद्या ददाति विनयम् की पालना करते हो। इन दिव्यांगों को खड़ा कराते हो माताओं– बहिनों। इनके बारे में आपके मन में विचार चलता है और विचार फिर कर्म बनता है। देखिये चैनराज जी लोढ़ा साहब आपके हमारे जैसे एक इंसान थे। उनके मन में भावना आयी कि मैं आदिवासी क्षेत्र में कम्बल वितरण करूँ। मैं इन लोगों के लिये भोजन बनाकर ले जाऊँ। मैं इन लोगों के

बच्चों के लिये कपड़े ले जाऊँ और फिर धीरे – धीरे विचार आगे बढते – बढते हॉस्पीटल बनाने तक का महान् यज्ञ उनके द्वारा हो गया।

दया धर्मस्य मूलम्। उनके जीवन में दया धर्म का मूल शब्द प्रेक्टिकल लाना। हरकिशनदास हॉस्पिटल में जब एड़मीट हुये, तीसरा हार्टअटैक जरा जोरों से आ गया। ड़ॉक्टरों ने कहा कि इनका बचना अब असंभव की तरह है। कुछ क्षणों में ही पारब्रह्म परमात्मा ने चमत्कार किया कि जैसे कान्ति कथा को आप सुनते हैं, मनन करते हैं और कान्ति कथा के आधार पर अपने सद्कर्म करते है। भक्ति भाव के साथ में–

मुख में हो राम नाम,
राम सेवा हाथ में।
तूं अकेला नहीं प्यारे,
राम तेरे साथ में।।

तो उन पर जैसी कृपा हुई वह अद्भुत है।

–कैलाश 'मानव'

धन तो तुम्हारा था ही नहीं

एक व्यक्ति के पास बहुत सारा पुश्तैनी धन था। इस पर भी उसे संतोष नहीं था। किसी गरीब या जरूरतमंद की मदद करना तो दूर स्वयं भी ठीक से खाता पीता भी नहीं था। पत्नी ने उसे कई बार समझाया भी कि पैसा जोड़ने की बजाय अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान दो।

गरीबों की मदद किया करो। उन की दुआओं से तुम प्रसन्न रह सकोंगे और श्री लक्ष्मी भी खुश होकर सदा हमारे यहां रहेगी।

किंतु उसने एक न सुनी उसे इस बात की चिंता थी कि कभी कोई यह धन चुरा ले गया तो क्या करूंगा। एक दिन वह धन की पोटली बांधकर रात को चुपचाप गांव के बाहर गड्ढा खोदकर उसमें दबा आया, अब वह रोजाना उस स्थान पर जाता और देख आता। पड़ोस के गांव का एक चोर प्रायः उस गांव में आया करता था। उसने इसको हमेशा उसी जगह आकर एक निश्चित स्थान पर आंख गड़ाए लौटते देखा है। उसे यह समझते देर न लगी कि इस स्थान पर अवश्य कोई मूल्यवान वस्तु दबी हुई है। एक दिन वह पौ फटने और उस व्यक्ति के पहुंचने से पूर्व ही उस स्थान पर पहुंचा और खुदाई कर पोटली निकाल ली। सुबह होने को ही थी ,चोर उस गड्ढे को खुला ही छोड़ रफूचक्कर हो गया। अंधेरा छंटते ही व्यक्ति घर से अपने धन के स्थान पर ज्योंही पहुंचा उसके होश उड़ गए। उसका सारा धन जा चुका था।

इतनी बड़ी हानि वह सहन ना कर सका और वहीं रोने लग गया। कुछ देर बाद पत्नी आई उसने सारी स्थिति जानी। वह बोली धन तो पहले भी आपके काम नहीं आया था और ना आपके जीवन में काम आ सकता था क्योंकि उसे आप ने एक जगह स्थिर कर दिया था। आपका अधिकार उस पर जरूर था फिर भी उसे छिपा कर रखा। ऐसी हालत में दुखी होने की बजाय अपनी आंखें खोलो और बचे खुचे धन को परमार्थ में लगाओ जो हमारे जीवन में खुशियों का कारण बन सके।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

अस्पताल की ऐसी दयनीय स्थिति देख कैलाश को बहुत दुख हुआ। उसने मन ही मन ठान लिया कि वह आगे से अस्पताल में भी कुछ समय व्यतीत करेगा। आधे घन्टे बाद बड़े डॉक्टर आये तो उसका खून लिया गया। इस बीच कमला पुनः गर्भवती हो गई। सिलाई का काम कम हो गया और खर्चे बढ़ गये। तब कार्यालय से किसी को डेपूटेशन पर भेजा जाता तो उसे 12 रु. प्रतिदिन का भत्ता मिलता था।

कैलाश ने पोस्टमास्टर से विनती की कि उसे पैसों की सख्त जरूरत है, यदि उसे भी डेपूटेशन पर भेजा जाय तो कुछ अतिरिक्त आय हो जायगी। पोस्ट मास्टर ने उसकी बात मान उसे भी भेजना शुरू कर दिया। 1973 में प्रसव हेतु कमला को अजमेर भेज दिया था जहां उसने उनकी दूसरी सन्तान पुत्र को जन्म दिया। इसका नाम प्रशान्त रखा गया। शीघ्र ही कमला दोनों बच्चों के साथ वापस पाली लौट आई। पोस्ट मास्टर कैलाश के प्रति बहुत दयालु थे, वे निरन्तर उसे डेपूटेशन पर भेजते रहते थे। एक बार वह 8 दिन के लिए रोहट गया, एक बच्चा गोद में और एक उंगली पकड़े, कमला ने सिर पर सिलाई मशीन रख ली व हाथ में सामान ले लिया, सब बस में बैठ कर निकल पड़े। 8 दिन के 96 रु. बनते थे, उस वक्त ये बहुत बड़ी बात थी। परिवार ले जाना जरूरी था वरना खाने के पैसे और बिगाड़ने पड़ते थे। क्वार्टर मिल जाता था। कैलाश ऑफिस में काम करता, कमला सिलाई करती रहती। कल्पना को स्टूल पर बिठा देते। **अंश-39**

थैक्यू नारायण सेवा

पेशे से ट्रक ड्राईवर अरुणसिंह की जिंदगी का सबसे बुरा दिन वो था जब एक दिन उनकी गाड़ी पर 11 हजार वोल्टेज बिजली का तार गिर पड़ा। उसे दोनों पांव और एक हाथ गंवाना पड़ा। उनका भाई कहता है–जी मेरा नाम अतुलसिंह, मेरे भैया अरुणसिंह मैं जादोन यू.पी. का रहने वाला हूं। मेरे भैया पेशे से ट्रक ड्राईवर थे और दो पैसे कमाकर परिवार का पालन– पोषण करते थे।एक दिन अचानक ऐसा आया कि मेरे भैया की गाड़ी पर 11 हजार वोल्टेज हाई टेंशन का तार गिर गया जिस कारण से पूरी गाड़ी में करंट आ गया।

मेरे भैया उसी में बैठे हुए थे। करंट के कारण झुलस गये और जिस कारण से मेरे भैया के दोनों पैरों को और एक हाथ भी गंवाना पड़ा, फिर उसके बाद काफी इलाज चलाना पड़ा। और हम पूर्णरूप से बर्बाद हो चुके थे भैया का इलाज करवाने में। बड़ी दुःख की बात तो ये है कि मेरी बहनों और मेरी खुद की पढ़ाई भी बंद हो चुकी थी। मुझे टी. वी. पे नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी हुई। यहां पर सारी सुविधाएं निःशुल्क है। और हम यहां पर आये हैं भैया के पैर लगे हैं तो मुझे बहुत खुशी हुई है। थेंक्यू नारायण सेवा संस्थान।

दिव्यांगता-मुक्ति

जितेन्द्र कुमार (17 वर्ष), पिता : श्री शिवजी, शहर : सिमराव /भोजपुर (बिहार)। जन्म से दिव्यांगता जितेन्द्र 15 वर्षों से रेंगती जिन्दगी का भार ढो रहा है। गांव के परिचित से संस्थान के बारे में जानकर पिता श्री शिवजी के मन में पुत्र के चलने की उम्मीद जागी। नारायण सेवा संस्थान में आकर पुत्र की जांच करवायी और जितेन्द्र के एक पांव का एवं दूसरे पांव का सफल ऑपरेशन हुआ। जितेन्द्र अपनी दिव्यांगता से मुक्ति पाकर प्रसन्न है।

इन छह तरीकों से रखे बच्चों को सुरक्षित

टीकाकरण कराते रहें – बच्चों की जरूरी वैक्सीन जहां भी उपलब्ध हो, समय पर लगवा लें। इनसे बच्चों की इम्यूनिटी बढ़ती है और उनमें संक्रमण की आशंका कम होती हैं। इसलिए टीकाकरण जरूरी है।

रंगीन फल–सब्जियां खिलाएं– इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए पौष्टिक आहार देना जरूरी है। इसे लए उन्हें हरी, लाल, पीली, नीली आदि रंगीन फल–सब्जियां अधिक खाने दें। इनमें न केवल माइक्रोन्यूट्रिएंट्स अधिक होते बल्कि एंटीऑक्सीडेट्स भी होते है। इनमे इम्यूनिटी बढ़ती है। भरपूर मात्रा मे पेय पदार्थ पिलाएं।

एसी कम चलाएं – एसी में एक ही हवा बार–बार उपयोग में आती है। इससे संक्रमण की आशंका रहती है। इसलिए बहुत जरूरी होने पर ही एसी का इस्तेमाल करें। एसी वाले कमरों में भी ताजी हवा आने दें।

सूर्य की रोशनी व खुली हवा में रखें – बच्चों को रोज करीब आधा–एक घंटे धूप के संपर्क में रखें। तेज धूप है तो बालकानी में ही बैठाएं। बच्चों के कमरे भी हवादार होने चाहिए।

अवसाद न आनें दें – बच्चों को मानसिक रूप से फिट रखें। अवसाद–एंग्जायटी होने पर जल्द संक्रमण की आशंका रहती है। इसलिए घर में ही बच्चों के साथ खेलें। अच्छी कहानियों सुनाएं। अच्छी किताबे भी पढ़ने को दें।

ये बीमारियां भी हो सकती – कुछ दिन बाद बारिश का मौसम शुरू होने वाला है। ऐसे में कोरोना ही नहीं मलेरियां, डेंगू , वायरल और निमोनिया भी हो सकता है। अगर कोई भी बुखार पैरासिटामोल देने के बाद तीन दिन के अंदर कम नहीं हो रहा है तो डॉक्टरी सलाह से जांचे करवाएं। सामान्य वायरल में तीसरे दिन बुखार उतरने लगता है। 4–5 वें दिन में खत्म हो जाता है।

कोरोना के गंभीर लक्षण ये – कोरोना की तीन अवस्था है। माइल्ड, मॉडरेट और सीवियर। माइल्ड रोगियों का इलाज घर में हो जाता है, लेकिन ऑक्सीजन का स्तर 94 प्रतिशत से कम हो रहा, बच्चा कुछ खा–पी नहीं रहा, सुस्ती, उल्टी–दस्त, बुखार और पल्स रेट 100 से अधिक है तो तत्काल डॉक्टर को बताएं। ऐसे बच्चों को हॉस्पिटल में भर्ती कराने की जरूरत है।

अनुभव अमृतम्

लालचन्द्र जी जैन साहब, वर्मा जी अद्भुत जीवन। अरे! महाराज 1500 बेग। एक किलो का पौष्टिक आहार का एक बेग। 1500 बेग तैयार किये जो तेल के कागज के खोखे आते थे बहुत बढ़िया उसी में जमाते गये। रस्सी वगैरा बांधी पी.एन.टी कॉलोनी में ऊपर ले जाकर के एकत्रित किया। अरे! साहब पई में शिविर लगाना है, गिर्वा तहसील में पई उस समय के प्रधान साहब रोशनलाल जी नागदा अब तो उनका स्वर्गवास हो गया। उन्होंने कहा– मैं प्रचार करवा दूंगा। आप तो अगले सण्डे को लेकर आओ। एक किराये की बस की। कितने रुपये लेंगे साहब? उन्होंने कहा– 550/– रुपये लूंगा। पई गांव में गये। वहाँ भी अनगिन महानुभाव राम–राम सा। हम आपके लिए पौष्टिक आहार लेकर के आये हैं, हम आपके लिए कपड़े भी लेकर के आये हैं। उनको टोकन दिए, प्रभु का स्मरण किया, प्रभु कीर्तन करवाया। भाई आप नशा करते हो यह अच्छी बात नहीं है। नशा छोड़ो जीवन मोड़ो। डॉ. आर.के. अग्रवाल साहब नाखून काट रहे हैं। राम–राम बोलो भाई इतने बड़े डॉ. हेड ऑफ डिपार्टमेन्ट आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज केन्सर विशेषज्ञ। के.एस हिरण साहब, हिरण एक्सरे क्लिनिक के मालिक इंजीनियर विश्वविद्यालय में अरे वाह! वाह! सत्य सांई बाबा के कार्यकर्त्ता हैं। राधेश्याम भाई साहब एक बार पंचवटी में कीर्तन में ले गये, भजन में ले गये। वही के.एस. हिरण साहब का परिचय हुआ। वहीं दीक्षित साहब आर.डी. दीक्षित साहब। सेन्ट्रल विद्यालय, सेन्ट्रल स्कूल के प्रिंसिपल साहब उनकी आदरणीय धर्मपत्नी जी संगीत की विशेषज्ञ प्रोफेसर साहिबा। नलवाया साहब बहुत अच्छा। सबका परिचय लेते गये, आपस में परिचय करवाते गये। अरे। साहब हितैषी साहब जीणी रेत पर हितैषी भवन अस्थल आश्रम के पास में हितैषी पुस्तक भण्डार उन्हीं का, हितैषी साहब देख रहे हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 166 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है

www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com

: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023